समुद्र में खोया हुआ आदमी

समुद्र में खोया हुआ आदमी

कथावस्तु :

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' अिस लघु-अुपन्यास की कथावस्तु संक्षेप में अिस प्रकार है -

श्यामलाल नया सपना लेकर दिल्ली चले आते हैं। वहाँ पर अेक ट्रान्सपोर्ट कम्पनी में अेक क्लर्क की नौकरी स्वीकार कर लेते हैं। अुन्हें अिस बात का यकीन है कि वे अेक न अेक दिन अुसी कंपनी के मैनेजर बन जायेंगे। लेकिन यह सम्भव नहीं हो पाता और जिन अुम्मीदों को लेकर वे दिल्ली आये हुअे थे, वे सब पूरी नहीं हो पातीं। आखिर अेक अनहोनी भी घटित

हो जाती है। उन्हें कम्पनी की नौकरी से हाथ धोना पड़ता है।

अिधर अुनका परिवार अजीबोगरीब हालातों से गुजर रहा है। श्यामलाल अनेकों तरह के धंधे ढूँढते है, मगर अुन्हें कामयाबी मिल नहीं पाती। कमलेश्वरजी ने श्यामलाल का 'मानस-मंथन' भी चित्रित किया है। वे अपने मध्यवर्गीय संस्कार से संघर्ष करते रहते है। वे अिस बात को मानने के लिअे कतअी तैयार नहीं हो पाते कि वे ही अपने परिवार की परवरिश करनेमें असमर्थ हैं। यही वजह है कि वे अपनी बेटियाँ नौकरियाँ करें, कदापि स्वीकार कर नहीं पाते। मगर वे है तो बड़े मजबूर। तमाम सारी कोशिशों के बावजूद भी वे 'पिता' के पद से हटने के लिअे राजी नहीं हो पाते। वे भीतर से पूरी तरह टूटे हुअे आदमी हैं मगर बाहरी रूप से वे अपनी हार स्वीकार नहीं कर पाते। श्यामलाल अपनी हार को जीत के रूप में देखने लगते है - बीरन के माध्यम से। यह तो बिलकुल स्वाभाविक बात है कि हर पिता अपने पुत्र के अधूरे अरमानों का पूर्णत्व देखना चाहता है। अुन्हें अिस बातका भरोसा है कि बीरन जब पढ़ लिखकर नौकरी पा लेगा, तो सारी समस्याअें खत्म हो जाअेंगी। अुनकी आशाओं की अेकमात्र केन्द्रबिंदू है - बीरन। मगर अैसा हो नहीं पाता। श्यामलाल जिस बात की अुम्मीद रखते है, वह भी पूरी नहीं हो पाती। हालात अुन्हें अितना मजबूर बनाते हैं कि बेचारे कहीं के भी नहीं रह जाते। अितनाही नहीं यही हालात अुन्हें भीतर से तोड़ते रहते है। अुनका आत्मविश्वास ढल जाता है।

परिवार की खस्ता हालत देखकर बीरन अेक नया रास्ता ढूँढ़ लेता है। वह जलसेना में शरीक हो जाता है। ट्रेनिंग के सिलसिले में दिल्ली से दूर चला जाता है। बीरन बैसे बड़ा समझदार युवक है। वह अपने घर की खस्ता

हालत को भली भाँति जान लेता है। अुसको यह मालूम है कि अुसकी पढ़ाअी के लिअे अुसके माँ बाप कितने कष्ट अुठा रहें हैं। अिसलिअे वह अपनी जिम्मेदारियों का भी भली भाँति खयाल रखता है। और मौका मिलते ही जलसेना में केंडिट हो जाता है।

विवश श्यामलाल हमेशा हालातों से संघर्ष करते रहते हैं। मगर जब बहिन समुद्र में खो जाता है, तो अुनकी सारी आशाअें खाक में मिल जाती हैं। अेक तरह से मानो आसमान ही अुन पर टूट पड़ता है। अिस बात का अुन्हें अितना जबरदस्त सदमा पहुँचता है कि वे भीतर से पूरी तरह टूट जाते हैं और आखिर हर बात को स्वीकार करने के लिअे मजबूर बन जाते हैं। यहाँ तक कि तारा की ब्याह भी स्वीकार कर लेते है। घर का बिखर बिखर जाना भी स्वीकार कर लेते हैं। समीरा को ट्रेनिंग के लिअे भेजने में स्वीकृति दे देते हैं और खुद अेक फैक्टरी के दरबान बनकर जी लेते हैं। अुनके सारे अरमान तबाह हो जाते हैं। ज़िन्दगी के आखरी वक्त वे अपने परिवार से दूर जा बैठने पर मजबूर हो जाते हैं और तनहा होकर अिस बेरहम दुनिया को गीली आँखों से मायूस बनके देखते ही रह जाते हैं। श्यामलाल का अस्तित्व भी खंड़ित होने लगता है। अपने परिवार से मिलने के लिअे वे कभी कभार लौटते हैं।

श्यामलाल की बीवी भी अजीबोगरीब हालातों में फँसी हुअी है। मगर वह शौहर की बनिस्बत ज्यादा व्यावहारिक है। वह अेक साधारण औरत है। अुसे अपने शौहर पर पूरा पूरा भरोसा है। वह अपने शौहर की मजबूरियों को देखकर अुन्हें कभी जलील नहीं करती, मगर अुसके सामने परिवार

के सारे स्वाल है जो अुसे सता रहे हैं। समीरा और तारा के अरमानों को अेक मां की हैसियत से समझ भी लेती है। यही वजह है कि वह खुद को हालातों के मुताबिक ढालती रहती है।

श्यामलाल की बीवी - रम्मी सचमुच अेक निहायत भली औरत है। अपने शौहर के साथ बिना किसी शिकवे के निभाती रहती है। वह हर बात को स्वीकारती चलती है। अुसके सामने जो कुछ है, वह परिस्थितीयों की देन है। बीरन की मौत हो चुकी है, अिस सच्चाअी को वह मानती है। बाहरी तौर पर वह अुसकी मौत को स्वीकार कर लेती है, मगर अुसका भीतरी दिल अिस बात को नहीं मानता कि अुसके बेटे की मौत हो गयी है।

समीरा और तारा के दिल में अपने माँ बाप तथा भाअी के प्रति प्यार है। दोनों समय समय पर फैशन भी कर लेती हैं। दोनों भी मॉडर्न लड़कियों की तरह जीना चाहती है। बीरन की मौत के बाद वे अपने घर को संभालना चाहती है। दोनों आगे चलकर अपना अपना रास्ता अपना लेती हैं। तारा यह सोच लेती है कि अपनी सारी मुश्किलें विवाह के बाद ही खत्म हो सकती हैं। अिसलिअे वह हरबंस के साथ शादी करके निकल जाती है। समीरा जिन्दगी के साथ मुकाबला करने के लिअे तैयार हो जाती है। मगर बेचारी आखिर अेक मामूली-सी नर्स बन जाती है।

हरबंस हमेशा जमाने के साथ साथ कदम मिलाकर चलनेवाला युवक है। वह अुतना भावुक नहीं जान पडता जितने श्यामलाल और अुसकी बीवी। वह ज़िन्दगी में विश्वास करता है। अुसके लिअे आदर्श की बातें अेकदम थोथी हैं। वह तारा की माँ को अपने घर ले जाने की सोचता है क्योंकि सिवा

अिसके कोअी दूसरा रास्ता नहीं है। हरबंस जज्बाती नहीं है। वह यथार्थ को मानकर चलनेवाला युवक है।

नमता मध्यमवर्गीय संस्कारों में पली हुअी लड़की है। वह बीरन को बेहद प्यार करती है। मगर अिस प्यार का अिज़हार नहीं करती। यह सब चुपचाप होता रहता है। वह बीरन को प्यार करती है, यह बात किसी और को मालूम नहीं है। वह जंगल के फूल की तरह लहलहाती है। और आखिर वही मुरझाकर दम भी तोड़ देती है। बीरन की मौत का जबरदस्त सदमा नमता को पहुँचता है। क्योंकि वह अुसी के अिंतजार में जी रही थी। अिस मामले में वह किसी से कुछ भी कह नहीं पाती। बीरन के खो जाने की खबर पाकर व्याकूल हो जाती है, तड़पती है और तड़पते तड़पते आखिर दम तोड़ देती है। अुसका सारा दर्द अनकहा ही रह जाता है।

बीरन ही अेक ऐसा पात्र है जो सारे अुपन्यास पर छाया हुआ है। वह अपने घर की हालत को भली भाँति जानता है। पिताजी का बोझ कुछ हल्का करने की दृष्टि से वह कोशिश भी करता है। जलसेना में भर्ती हो जाता है। ट्रेनिंग के दौरान वह दिल्ली से दूर जाता है। वह अेक साहसी युवक है। नमता को दिल से चाहता है। लेकिन वह अिस बात को राज ही रखता है। वह कर्म में विश्वास करता है। मगर बदनसीबी तो यह है कि अुसका सुनहरा भविष्य, अुसकी ज़िन्दगी बीच में ही तबाह हो जाती है। बीरन समुद्र में खो जाता है। अेक सपना, अेक आशा, अेक ज़िन्दगी, अेक सुनहरा भविष्य, अेक आलम, सब चकनाचुर हो जाते हैं। अेक जलती हुअी शमा अचानक बुझ जाती है। घोर अंधःकार फैल जाता है। कभी न हटनेवाला अंधःकार ।

पात्र और चरित्र चित्रण -

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' में तमाम सारे पात्र पाये जाते हैं। अिन पात्रों के चरित्रों की कअी मौलिक विशेषताअें हमारे सामने आ जाती है। पुरुष पात्रों में - श्यामलाल, बीरन तथा हरबंस प्रमुख हैं और नारी पात्रों में रम्मी, समीरा, तारा अेवं नमता प्रमुख हैं।

श्यामलाल - आर्थिक रूप से जर्जर हैं। मजबूर हैं। हालात ही अुन्हें मजबूर बनाते हैं। हालातों के चक्रव्यूह में वे बुरीतरह फँस जाते हैं। हालातों के साथ मुकाबला करते रहते हैं। कमलेश्वरजी ने श्यामलाल की छटपटाहट का वर्णन भी किया है। अपने परिवार को सम्भालने की जिद अुनमें है। श्यामलाल आशावादी हैं, मगर अुनका यह आशावाद हालातों के टकराव से चकनाचुर हो जाता है। वे अपनी नौकरी खो बैठते हैं। अब बीरन पर अुनकी सारी आशाअें टिकी हुअी हैं। जहाँ श्यामलाल आशावादी नजर आते हैं, वहाँ पर वे आदर्शवादी भी लगते हैं। अपनी बेटियाँ कहीं बाहर जाकर नौकरियाँ करें, अिस बात के वे खिलाफ हैं। मगर अुनका यह आदर्शवाद भी हालातों के कशमकश में ढह जाता है।

बीरन - बीरन पूरे अुपन्यास पर छाया हुआ दिखाअी देता है। हालातों ने अुसे भी मजबूर बना दिया है। लेकिन वह है तो बड़ा समझदार। वह भूलकर भी अपनी जरूरतों का अिज़हार नहीं करता है। बीरन हमेशा चुप रहनेवाला युवक है। मगर वह है तो बड़ा साहसी। वह कर्म में विश्वास करता है। अवसर का लाभ अुठाकर, वह जलसेना में भर्ती हो जाता है। कुछ कर दिखाने की अुसमें हिम्मत है। वह नमता को प्यार भी करता है। मगर

यह सब चुपचाप होता रहता है।

हरबंस - हरबंस है तो बड़ा व्यावहारिक आदमी। दुनियादारी को भली भाँति समझता है। वह जोशीला भी है। नये ज़माने के साथ साथ कदम मिलाकर चलता रहता है। वह अुतना भावुक नहीं है। अुसके लिअे आदर्श वगैरा सब थोथा है। वह समयगत सच्चाअियों को जाननेवाला आदमी है। वह दुनिया को जज्बाती नजरों से कभी देखता नहीं है। तारा से शादी कर लेता है - अेकसही आदमी के रूप में।

रम्मी - रम्मी श्यामलाल की बीवी है। अपने शौहर पर अुसको पूरा यकीन है। शौहर की मजबूरियों को जानकर भी अुन्हें कभी ज़ाहिर नहीं करती। वह अेक साधारण नारी हैं। मगर श्यामलाल की बनिस्बत, वह जादा व्यावहारिक है।

तारा - समीरा - श्यामलाल और रम्मी की संताने हैं - तारा - समीरा। अुनके दिल में आम लड़कियों की तरह मां-बाप के प्रति ज्यादा प्यार है। दोनों फैशनेबल भी हैं। मामी की मृत्यु के बाद वे अपने परिवार को संभालना चाहती हैं। तारा अपनी सारी समस्याओं का हल विवाह में देखकर हरबंस के साथ विवाह करके चली जाती है। समीरा नये दायित्व से परिचित है। नये जमाने के साथ चलने को तैयार है। आखिर में वह अेक मामूली सी नर्स बन जाती है।

नमता - अिस लघु-अुपन्यास में सच्ची त्रासदी नमता की है। अुसकी यह त्रासदी अव्यक्त है। वह बीरन को प्यार करती है। मगर चुपचाप ढंग से। बीरन की मौत का बड़ा जबरदस्त सदमा नमता को पहुँचता है। बीरन

की याद में वह शमा की तरह जलती रहती है। और आखिर यह शमा बुझ जाती है। नमता का सारा दर्द अनकहा ही रह जाता है।

संक्षेप में कहना हो, तो यों कहा जा सकता है कि अिस लघु-अुपन्यास के सारे पात्र ज़िन्दादिल अेवं स्वाभाविक नजर आते हैं। हर पात्र अपनी अपनी विशेषता लेकर सामने आ जाता है। ये पात्र सिर्फ पात्र नहीं है। बल्कि मध्यमवर्गीय पात्रों का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। अिन पात्रों का चरित्र चित्रण बिलकुल सहज बन पड़ा है। अुनमें कहीं भी जोड़-तोड़ नजर नहीं आती है। ये सभी पात्र अपनी सच्चाअियाँ पेश करते हैं। हर पात्र का अपना अलग अेवं अन्यतम महत्व रहा है।

कथोपकथन -

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' की कथोपकथन प्रधान लघु-अुपन्यास है। अिन कथोपकथनों के ज़रिअे अेक और कथावस्तु विकसित होती है, तो दूसरी ओर पात्रों की चरित्रगत विशेषताअें भी स्पष्ट हो जाती है। श्यामलाल, हरबंस, रम्मी और समीरा के कथोपकथन बिलकुल यथार्थ और स्वाभाविक बन पड़े है। ये कथोपकथन कहीं कहीं बिलकुल छोटे है तो कहीं कहीं लम्बे चौड़े भी बन पड़े हैं। अिनमें पाठकों को प्रभावित करने की जबरदस्त शक्ति है। निम्नांकित कथोपकथन में श्यामलाल का क्रोध का भाव झलकता है। मिसाल के तौर पर देखिअेगा -

- कल से तारा नहीं जाअेगी।
- क्यों ?
- कह दिया बस।
- कोअी बात भी हो।

- वो हरबंस मेरी बेइज्जती करता है। आज दुकान पर उसने सबको चाय के लिये पूछा, मुझसे नहीं। यहाँ रोज उसके लिये चाय शरबत बनता है।
- तो क्या हुआ, कोभी घर आवे तो हमारा भी कुछ फ़र्ज़ होता है।
- मैं नहीं बर्दाश्त करता।
- अच्छा - ठीक है।

'समुद्र मे खोया हुआ आदमी' में संक्षिप्त कथोपकथनों की भरमार दिखाई देती है। मिसाल के तौर पर देखिअेगा -

- सब कहाँ गअे ?
- जरा बाजार तक चक्कर लगाने ....
- किसके साथ....
- हरबंस ले गया है.....
- तुम चली जाती.....
- तो क्या हो गया....सब अपना भला बुरा समझने लगी है।

रात में जब दरवाज़े पर दस्तक होती है, तब श्यामलाल और रम्मी के कथोपकथन पाठकों की उत्सुकता बनाअे रखते है।

- कौन था ?
- कोअी नहीं।
- आवाज तो सुनी थी।
- लगी तो मुझे भी थी। हवा होगी....
- गली में देखा था....
- हाँ।.....

- देखो शायद कोअी खटखटा रहा है
- हवा ही होगी।
- तुम देखो तो जरा ।
- कोअी होगा तो फिर खटखटाअेगा ।

अिस प्रकार अिस लघु-अुपन्यास के कथोपकथन बिलकुल सार्थक और पात्रों के स्वभावों के अनुकूल बन पडे हैं। ये कथोपकथन बिलकुल सहज बन पडे है। अुनमें सम्प्रेषणीयता है।

वातावरण -

कमलेश्वरजी ने अिस लघु-अुपन्यास में सागरी वातावरण का जीवंत चित्रांकन किया है। जैसे -

''कहीं कहीं तो समुद्र का जल अितना सफेद और तेज होता कि आस्मान पर भी अुसका अक्स पड़ने लगता था। अक्स की सफेद धुन्ध में सिवा जहाज के और कुछ नजर नहीं आता था। धुन्ध की सुरंग में लगातार मीलों का सफर जारी रहता था।''[१]

बर्फीले समुद्र का भी जीता-जागता चित्र कमलेश्वरजी ने पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। जैसे -

''दूर दूर तक बर्फ का समुद्र था...और बर्फ पर बैठे थे सफेद सील। हजारों की तादाद में...जैसे बर्फ से ही पैदा हुअे हो। पेंग्विन पक्षियों के झुण्ड जगह जगह जमा थे....वे बोतलों की तरह बैठे हुअे थे और पेंग्विन बर्फ में लेटे हुअे थे। जहाँ समुद्र का पानी फूटकर निकल आया था और

झीलें - सी बन गअी थी अुनमें वे हिमानी मछलियाँ खोज रहे थे।....चारों तरफ नीरवता थी....निर्जन अेकान्त।.....प्रकृति की विराटता सामने फैली हुअी थी....सर्द हवा और बर्फ के अलावा कहीं कुछ भी नहीं था। चारों ओर था बर्फ....और खामोशी....सन्नाटा और बर्फ की सफेदी..।[२]

अिसी लघु-अुपन्यास में अुन्होंने महानगरीय वातावरण का भी सजीव चित्रांकन किया है।

भाषा शैली -

भाषा की दृष्टि से भी 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' प्रौढ लघु-अुपन्यास कहा जा सकता है। अिसके वाक्य छोटे छोटे और अत्यन्त प्रभावपूर्ण बन पड़े हैं। भाषा भी पात्रों के स्वभाव में अनुकुल बन पड़ी हैं। भाषा बिलकुल सहज और यथार्थ जान पड़ती है। कमलेश्वरजी के अन्य लघु-अुपन्यासों की तरह अिसमें भी अंग्रेजी और अुर्दू शब्दों का मिलाप दिखाअी पड़ता है। जैसे -

अुर्दू शब्द - आहट, अखबार, शक्लें, तब्दील, सिलसिला, खामोशी, आदमी, रफ्ता रफ्ता, महसूस, मायूसी, खौफनाक, रिश्ते, बारदान, महक आदि।

अंग्रेजी शब्द - ट्रान्सपोर्ट, कम्पनी, ब्रांच, गुडलक, डिजाअिन, कमीशन, लीडर, केस, रिपोर्ट आदि।

अिसकी शैली प्रवाहपूर्ण और स्वाभाविक बन पड़ी है। शैली अितिवृत्तात्मक है।

उद्देश्य -

"यह उपन्यास आज़ादी के बाद के भारत का उपन्यास है। कथात्मक स्तर पर यह अेक टूटते हुअे परिवार की कहानी है। बेरहम महानगर मे धीरे धीरे टूटते हुअे परिवार की करुण गाथा हैं।"[३]

परिवार के टूटने की प्रक्रिया का अंकन कमलेश्वरजी ने अिस लघु उपन्यास में किया है। श्यामलाल के परिवार की ट्रेजडी अिसमें दिखाअी गअी है। साथ ही साथ श्यामलाल, रम्मी, तारा और समीरा की मजबूरियों का भी चित्रण करना अिस लघु-उपन्यास का मकसद रहा है।

"यह उपन्यास नये पुराने की समानान्तर यात्रा का दिग्दर्शन कराता है। अेक कोणे से यह उन युवक युवतीयों की कहानी भी है जिनके कंधों पर कल का भविष्य टिका हुआ है। तथा जिनकी ओर उनके घरवाले टकटकी बाँधे देख रहे हैं.... क्योंकि स्वतंत्रता के बाद मध्यवर्ग की हालात और बदली हुअी और वह अच्छे दिनों की लम्बी प्रतीक्षा से अब ऊब कर हताश हो चुकी है... अिसे समुद्र में खोया हुआ आदमी अिसलिअे कहा गया है कि अेक आदमी (बीरन) सचमुच समुद्र में खो जाता है, परन्तु दूसरी ओर अिस विराट जनसमुद्र में अेक और आदमी खो जाता है, वह आदमी है - श्यामलाल के भीतर का संस्कारशील आदमी।"[४]

-

टिप्पणियाँ

१. कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी
पृष्ठ - २८

२. कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी
पृष्ठ - ३१

३. कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी
यह उपन्यास - कुछ बातें
पृष्ठ - १

४. कमलेश्वर - समुद्र में खोया हुआ आदमी
पृष्ठ - १४, १५.

- o -